इकाई 17 मौर्य*

इकाई की रूपरेखा

17.0 उद्देश्य
17.1 प्रस्तावना
17.2 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
17.3 अभिलेखों का विस्तार
17.4 *धम्म*
17.4.1 कारण
17.4.2 *धम्म* के तत्व
17.4.3 अशोक की *धम्म* नीति और मौर्य राज्य
17.4.4 *धम्म*-व्याख्यायें
17.5 मौर्यकला एवं वास्तुकला
17.5.1 मौर्य कला के उदाहरण
17.6 साम्राज्य का विघटन
17.6.1 अशोक के उत्तराधिकारी
17.6.2 विघटन के अन्य राजनीतिक कारण
17.6.3 अशोक और उसकी नीतियां
17.6.4 आर्थिक समस्याएं
17.7 उत्तर मौर्य काल में स्थानीय राजनीतिक व्यवस्थाओं का विकास
17.8 सारांश
17.9 शब्दावली
17.10 बोध प्रश्नों के उत्तर
17.11 संदर्भ ग्रन्थ

17.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़कर आपः

- यह समझ सकेंगे कि *धम्म* नीति के प्रतिपादन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि क्या थी;
- अशोक की *धम्म* नीति की मुख्य विशेषताओं;
- मौर्यकालीन कला और वास्तुकला की मुख्य विशेषतायें; और
- मौर्य साम्राज्य के पतन के उत्तरदायी विभिन्न कारकों के बारे में जानेंगे।

17.1 प्रस्तावना

अनेक इतिहासकार अशोक को प्राचीन विश्व का महानतम् सम्राट मानते हैं। उसकी *धम्म* नीति विद्वानों के बीच निरंतर चर्चा का विषय रही है। *धम्म* शब्द संस्कृत के शब्द धर्म का

*यह इकाई ई.एच.आई.-02, खंड-5 से ली गयी है।

प्राकृत रूप है। *धम्म* को विभिन्न अर्थों जैसे धर्मपरायणता, नैतिक जीवन, सदाचार आदि के रूप में व्याख्यायित किया गया है।

किन्तु अशोक द्वारा प्रयुक्त *धम्म* को समझने के लिये सबसे अच्छा तरीका यह है कि उसके अभिलेखों को पढ़ा जाए। यह अभिलेख मुख्य रूप से इसलिये लिखे गये थे कि सारे साम्राज्य में लोगों को *धम्म* के सिद्धांतों के बारे में समझाया जाये। *धम्म* सिद्धांतों को सबके लिये सुलभ और बोधगम्य बनाने के लिये उसने अभिलेखों और शिला-लेखों को सारे राज्य के महत्वपूर्ण स्थानों पर लगवाया। *धम्म* के संदेशवाहकों को साम्राज्य के बाहर भी भेजा। यह स्पष्ट समझ लेना चाहिये कि *धम्म* से किसी विशेष धार्मिक विश्वास या व्यवहार का तात्पर्य नहीं है, अतः *धम्म* (या इसके संस्कृत पर्याय धर्म) का अनुवाद धर्म नहीं मानना चाहिये। साथ ही *धम्म* मनमाने तौर पर बनाया हुआ शाही सिद्धांत भी नहीं था। *धम्म* का संबंध मोटे रूप से सामाजिक व्यवहार और क्रियाओं से था। अशोक ने *धम्म* में उस समय के सभी प्रचलित विविध सामाजिक नियमों का मिश्रण किया गया था। अशोक ने *धम्म* का क्यों और कैसे प्रवर्तन किया और इससे उसका क्या तात्पर्य था, यह जानने के लिए उस समय की विशेषताओं को समझना होगा और बौद्ध, ब्राह्मण और अन्य ग्रन्थों को समझना होगा जिनमें सामाजिक व्यवहार के नियमों का वर्णन है।

17.2 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

धम्म नीति के विभिन्न पक्षों तथा इसके प्रतिपादन के कारणों को समझने के लिए हमें आवश्यक रूप से उस ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर दृष्टिपात करना होगा जिसके कारण अशोक को यह नीति अस्तित्व में लानी पड़ी। अगले तीन भागों में हम ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की चर्चा करेंगे।

समाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि

जैसा कि कहा जा चुका है कि मौर्य काल में समाज के आर्थिक ढांचे में काफ़ी परिवर्तन आए। लोहे के प्रयोग से अतिरिक्त उत्पादन की प्रक्रिया आरम्भ हुई। इस प्रकार सरल ग्रामीण अर्थव्यवस्था से एक ऐसी अर्थव्यवस्था जिसमें शहरों तथा नगरों की महत्वपूर्ण भूमिका थी की ओर संक्रमण हुआ। यह सामान्य रूप से कहा जाता है कि उत्तरी काली पॉलिश किए मृद्भांड इस युग की भौतिक सम्पन्नता का प्रतीक है। आहत चांदी के सिक्के, तथा अन्य प्रकार के सिक्कों का प्रयोग, व्यापार मार्गों को राज्य द्वारा सुरक्षा प्रदान किया जाना तथा शहरी केन्द्रों का उदय अर्थव्यवस्था में ऐसे संरचनात्मक परिवर्तन की ओर संकेत करते हैं जिनके लिए समाज में सामंजस्य की आवश्यकता थी। व्यापारी वर्ग इस समय तक समाज में अपना स्थान बना चुका था। शहरी संस्कृति के उदय के साथ ही समाज के संगठन में लचीलापन अनिवार्य बन गया। कृषि उपयोग में लाए जाने वाले बहिर्वर्ती क्षेत्रों की जन जातियों एवं अन्य लोगों के समाज की मुख्य धारा में विलय से भी समस्याएं खड़ी हुई। चार वर्गों पर आधारित ब्राह्मणीय सामाजिक व्यवस्था और अधिक कठोर बनी व वह व्यापारी वर्ग को वर्णव्यवस्था में उच्च स्तर देना नहीं चाहती थी। ब्राह्मण वर्ग की इस कठोरता से सामाजिक विभाजन का संकट और गहरा हो गया। निम्न वर्ग विभिन्न विधर्मिक सम्प्रदायों की ओर आकृष्ट होने लगे जिसके कारण सामाजिक तनाव उत्पन्न होने लगा। ऐसी ही विषम परिस्थिति में सम्राट अशोक ने 269 बी.सी.ई. में राज्य का दायित्व ग्रहण किया।

धार्मिक परिस्थितियां

उत्तर वैदिक काल के दौरान समाज पर ब्राह्मणों की जो पकड मजबूत हुई थी, उसे अब निरंतर आघात पहुंच रहा था। पुजारियों की सुविधायें, वर्णव्यवस्था की कठोरता तथा व्यापक

कर्मकांडों के प्रचलन पर अब प्रश्न उठने लगे थे। चार वर्णों के सबसे निम्न वर्ण नए सम्प्रदाय की ओर आकृष्ट होने लगा। वैश्य जो कि किसी तरह उच्च श्रेणी में सम्मिलित कर लिए गए थे, ब्राह्मणों तथा क्षत्रियों की तुलना में तुच्छ समझे जाते थे। व्यापारी वर्ग द्वारा ब्राह्मणवाद का विरोध समाज के अन्य संप्रदायों के लिए प्रेरणास्रोत बन रहा था।

बौद्ध मत का बल कष्टों पर था तथा इसने मध्य मार्ग अपनाने पर बल दिया। यह मत नैतिक सिद्धांतों पर आधारित था। बौद्ध मत ने ब्राह्मणों के प्रभुत्व को नकारा और बलि तथा कर्मकाण्डों का विरोध किया। इस प्रकार इस मत ने निम्न वर्गों तथा उदीयमान सामाजिक वर्गों को अपनी ओर आकृष्ट किया। बौद्ध मत द्वारा सामाजिक संबंधों में मानवीय दृष्टिकोण का प्रचार निर्धन वर्गों को अपनी ओर और भी आकृष्ट करने लगा।

राज्य व्यवस्था

आप पढ़ चुके हैं कि छठी शताब्दी बी.सी.ई. में महाजनपदों के उद्भव के साथ भारत के अनेक भागों में राज्य व्यवस्था की शुरुआत हुई। इसका अर्थ यह हुआ कि समाज के एक छोटे तबके के पास शक्ति का संकेन्द्रण हुआ। इस शक्ति का वे समाज के अन्य तबकों पर अनेक तरीकों तथा कारणों से प्रयोग करते थे। कुछ ऐसे राजतंत्र थे जिनमें राजा सर्वशक्तिमान था तथा ऐसे गणसंघ थे जिनमें शासन का नियंत्रण वंशानुगत क्षत्रियों या कुछ समुदायों के पास था। जिस समय अशोक सिंहासन पर बैठा, दो सौ साल पुरानी राज्य व्यवस्था काफ़ी विस्तृत और जटिल हो चुकी थी। इस व्यवस्था की प्रमुख विशेषतायें निम्न थीं:

- एक क्षेत्र विशेष (मगध) का राजनैतिक प्रभुत्व उस विशाल क्षेत्र पर स्थापित हो चुका था जिसमें पहले कई राज्य, गणसंघ तथा ऐसे भाग थे जहां किसी प्रकार की संगठित राज्य व्यवस्था नहीं थी।
- इस विशाल क्षेत्र में कई प्रकार के भौगोलिक क्षेत्र, सांस्कृतिक क्षेत्र तथा विभिन्न प्रकार के धर्म, विचार और परम्परायें थीं।
- शासन वर्ग द्वारा बल का एकाधिकार जिसमें सम्राट सर्वोच्च प्रमुख था।
- कृषि, वाणिज्य तथा अन्य स्रोतों से अधिशेष की पर्याप्त मात्रा का विनियोग।
- एक प्रशासनिक तंत्र का अस्तित्व।

राज्य व्यवस्था की जटिलता के कारण सम्राट को ऐसी सृजनात्मक नीति का निर्माण करना ज़रूरी था जिसके अंतर्गत एक बड़े साम्राज्य, जिसमें अर्थव्यवस्था तथा धर्मों की अनेकरूपता थी, में सैन्य शक्ति के कम से कम प्रयोग की आवश्यकता हो। इस पर नियंत्रण केवल सेना के बल पर नहीं हो सकता था। इसका अत्यंत उपयुक्त विकल्प एक ऐसी नीति का प्रचार एवं प्रसार था जो कि सैद्धांतिक आधार रखती हो तथा समाज के सभी वर्गों पर प्रभाव डाल सकती हो। *धम्म* नीति इसी दिशा में एक प्रयास था।

17.3 अभिलेखों का विस्तार

अशोक ने *धम्म* की नीति के प्रसार के लिए शिलालेखों/अभिलेखों का माध्यम अपनाया। अशोक ने *धम्म* नीति के बारे में अपने विचार इन स्तम्भों/शिलाओं पर इस आशय से खुदवाए कि विभिन्न स्थानों पर लोग उन्हें पढें। अशोक इस माध्यम से अपनी जनता से सीधा सम्पर्क स्थापित करना चाहता था। यह अभिलेख उसके शासन काल के विभिन्न वर्षों में लिखे गए।

अभिलेखों को दो श्रेणियों में बांटा जा सकता है। थोड़े से अभिलेखों से यह पता चलता है कि राजा बौद्ध मत का अनुयायी था और ये अभिलेख बौद्ध संप्रदाय अथवा संघों को संबोधित करते हुए लिखे गए थे। इन अभिलेखों में बौद्ध मत से अशोक की व्यक्तिगत सम्बद्धता की घोषणा है। इनमें वह बौद्ध मत में अपनी व्यक्तिगत श्रद्धा अभिव्यक्त करता है। इनमें से एक अभिलेख में वह बौद्ध ग्रन्थों जिनका नाम इन अभिलेखों में दिया गया है कि चर्चा करता है और सभी बौद्धों को उनसे परिचित होने का आह्वावन करता है। अभिलेखों की अन्य श्रेणियां वृहद शिला लेख तथा लघु शिला लेख के नाम से जानी जाती है जो कि चट्टानों पर खोदी गई हैं तथा स्तम्भ लेखों के लिए विशेष रूप से स्तम्भ खड़े किए गए थे।

यह सभी ऐसे स्थानों पर स्थापित है जहां बड़ी संख्या में लोगों के इकट्ठा होने की संभावना हो सकती थी। अतः जैसा कि कहा जा चुका है, यह लेख जन-साधारण के लिए घोषणा कहे जा सकते हैं। इनमें *धम्म* नीति की व्याख्या की गई है। हमें अशोक की *धम्म* नीति जिसमें सामाजिक उत्तरदायित्व की बात कही गई है तथा अशोक की बौद्ध धर्म में व्यक्तिगत आस्था में अंतर करना चाहिए। कुछ समय पूर्व तक इतिहासकारों के बीच अशोक की *धम्म* नीति तथा बौद्ध मत के अनुयायी के रूप में अशोक को बिना अंतर किए एक ही संदर्भ में रखकर अध्ययन करने की प्रवृति रही है। अभिलेखों के सूक्ष्म अध्ययन से पता चलता है कि एक ओर जहां अशोक बौद्ध मत में अपनी पूरी आस्था रखता था वहीं दूसरी ओर वह *धम्म*

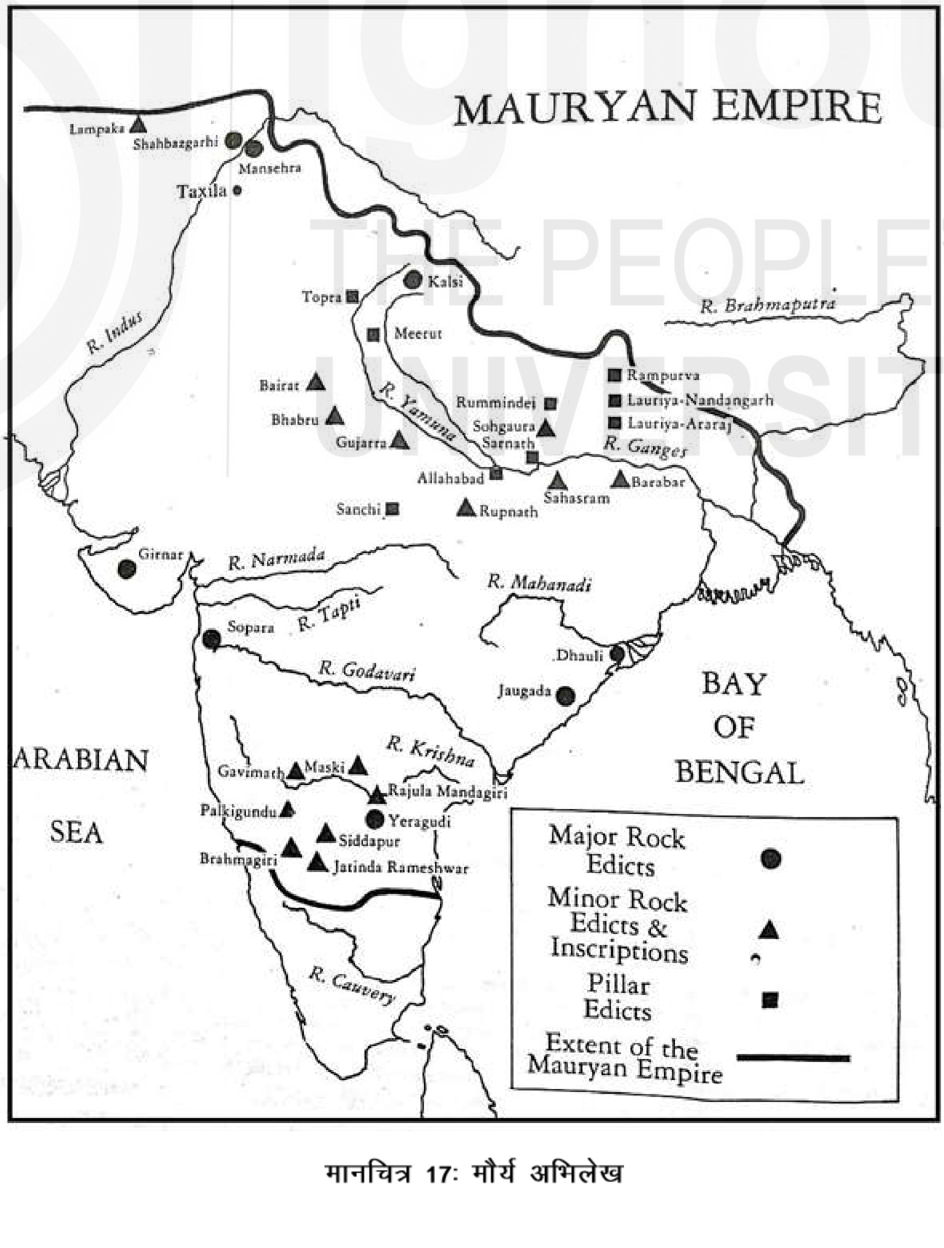

मानचित्र 17: मौर्य अभिलेख

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

नीति के द्वारा समाज के विभिन्न वर्गों के बीच सामाजिक उत्तरदायित्व तथा सहिष्णुता के महत्व का आदेश भी दे रहा था।

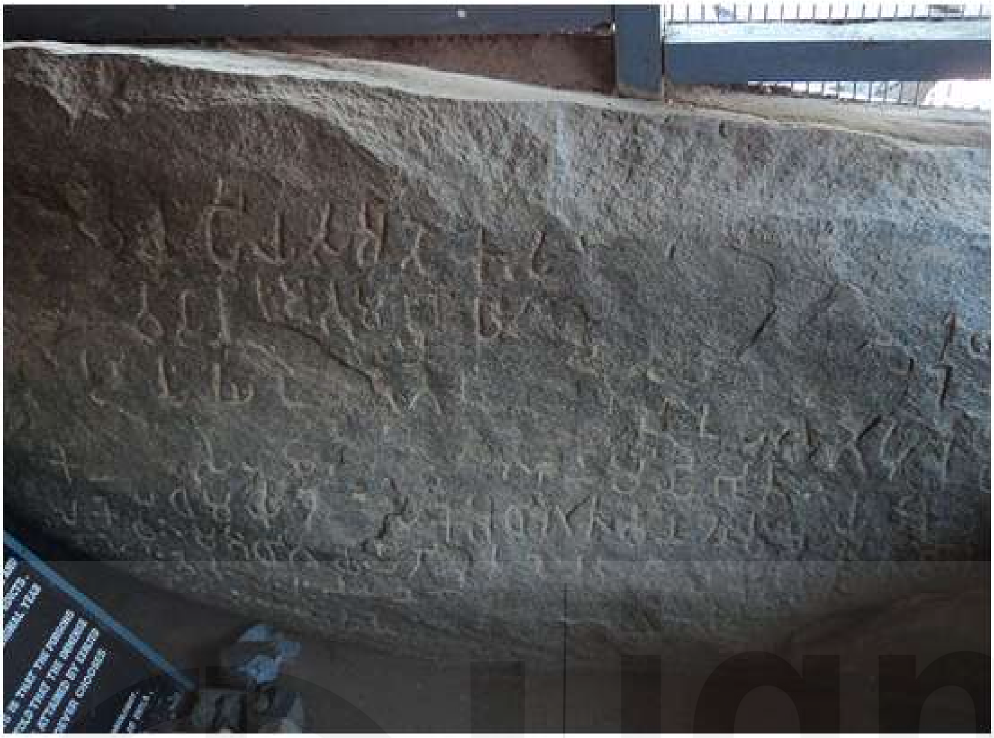

मस्कि में लघु शिलालेख. इसमें विशेष रूप से 'अशोक' (शीर्ष पंक्ति के बीच में) नाम का उल्लेख है, जिसका शीर्षक 'देवानामपिया' ('प्रभु का प्रिय') है. श्रेयः सुदीप एम. स्रोतः विकिमीडिया कॉमन्स (https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Rock_edict-_closer_look.JPG

अशोक ने अपने शिलालेखों में जिन चार लिपियों का इस्तेमाल किया हैंः ब्राह्मी (ऊपर बाएं), खरोष्ठी (ऊपर दाएं), ग्रीक (नीचे बाएं) और अरमैक (नीचे दाएं)। श्रेयः ब्राह्मी शिलालेख के लिएः लौरा सोला; खरोष्ठी शिलालेख के लिएः निस्खान 65; ग्रीक शिलालेख के लिएः शलम्बरगर अरमैक शिलालेखा के लिएः शलम्बरगर। (https://commons.wikimedia.org/wiki/File:The_four_scripts_of_Ashoka.jpg)

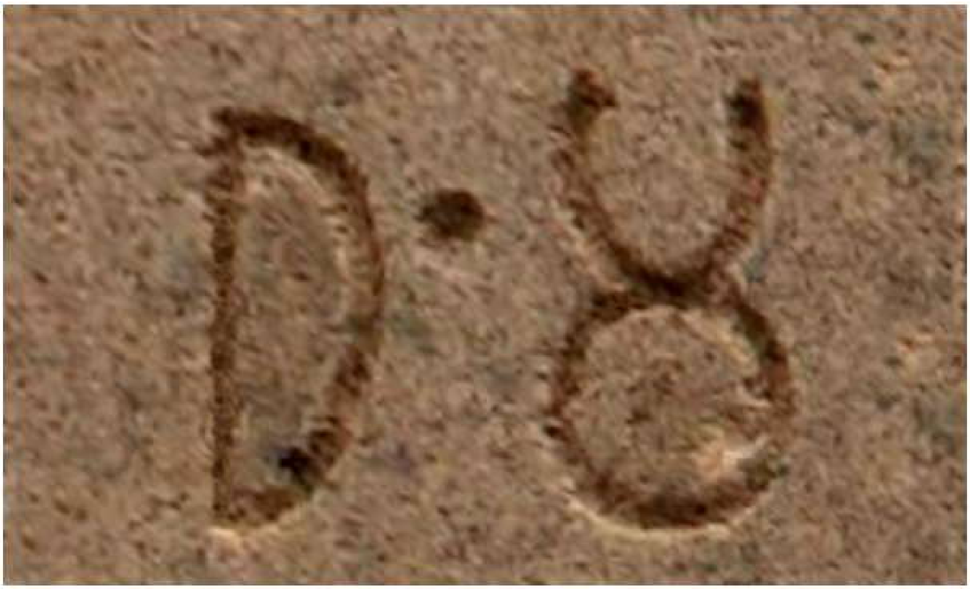

प्राकृत शब्द 'ध-म-म' (संस्कृतः धर्म) ब्राह्मी लिपि में, जैसा कि उसके अभिलेखों में अशोक द्वारा अंकित है। टोपरा कालन स्तंभ; अब नई दिल्ली में। श्रेयः अभटनागर 2, स्रोतः विकिमीडिया कॉमन्स। (https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Dhamma_inscription.jpg)

17.4 *धम्म*

धम्म की नीति एक जटिल समाज के सामने आने वाली कुछ समस्याओं का हल करने का एक ईमानदार प्रयास था। इस नीति का जन्म हाँलाकि अशोक के मस्तिष्क में था और इसके माध्यम से उन्होंने समाज के भीतर कुछ तनावों को हल करने की कोशिश की।

17.4.1 कारण

धम्म नीति की पृष्ठभूमि में निहित कारणों का अध्ययन करने के अंतर्गत हमने इसी इकाई में इसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की चर्चा की है। हमने पढ़ा कि *धम्म* नीति इन समस्याओं के समाधान का एक महत्वपूर्ण प्रयास था, जिनसे इस युग का जटिल समाज जूझ रहा था। यह नीति अशोक के दिमाग की उपज थी तथा समाज के अंतर्गत व्याप्त सामाजिक तनावों के समाधान के प्रति उसका प्रयास था। अशोक के निजी विश्वास तथा साम्राज्य के समक्ष खड़ी समस्याओं के समाधान के विषय में उसके विचार *धम्म* नीति के प्रतिपादन का कारण बने।

अतः आवश्यक है कि हम उस सामाजिक माहौल को समझें जिसके अंतर्गत अशोक पला, बढ़ा तथा जिसका प्रभाव उसके जीवन के बाद के वर्षों पर दिखाई देता है।

मौर्य राजा उदारवादी दृष्टिकोण रखते थे। चंद्रगुप्त अपने जीवन के उत्तरकाल में जैन मत का अनुयायी हो गया तथा बिंदुसार आजीवक मत में विश्वास रखता था। स्वयं अशोक ने अपने निजी जीवन में बौद्ध मत स्वीकार किया, तथापि उसने अपनी जनता पर बौद्ध मत थोपने का प्रयास कभी नहीं किया। *धम्म* नीति के तत्वों का अध्ययन करने से पूर्व परिस्थितियों पर नज़र डालें जिन्होंने ऐसी नीति को जन्म दिया।

- जब अशोक राजसिंहासन पर आसीन हुआ तब मौर्य साम्राज्य व्यवस्था जटिल स्वरूप ले चुकी थी। साम्राज्यिक व्यवस्था अपने में विभिन्न संस्कृतियों, विश्वासों और सामाजिक व राजनीतिक व्यवस्थाओं को आत्मसात कर चुकी थी। अशोक के समक्ष दो ही विकल्प थे। एक ओर यह ढांचे को बल प्रयोग द्वारा स्थिर रख सकता था, जिस पर

अत्यधिक व्यय की आवश्यकता थी अथवा दूसरी ओर वह ऐसे नैतिक मूल्य प्रस्तुत करे जो कि सभी को स्वीकार्य हो तथा सभी सामाजिक वर्गों एवं धार्मिक विश्वासों के बीच अपना स्थान बना लें। अशोक ने यह विकल्प *धम्म* नीति में ढूंढा।

- अशोक उन तनावों से पूरी तरह परिचित था जो जैन, बौद्ध तथा आजीवक जैसे वैधर्मिक सम्प्रदायों के उदय के कारण समाज में आ गये थे। यह सभी किसी न किसी रूप में ब्राह्मणवाद के विरोधी थे और इनके समर्थकों की संख्या बढ़ रही थी। परंतु अब भी ब्राह्मण समाज पर अपना नियंत्रण बनाये हुये थे, इन परिस्थितियों में किसी न किसी रूप में वैमनस्य का होना अवश्यंभावी था। ऐसी दशा में परस्पर सौहार्द और विश्वास का वातावरण बनाना आवश्यक था।

- साम्राज्य के कुछ भाग ऐसे भी थे जहां न तो ब्राह्मणवाद का प्रभुत्व था न ही वैधर्मिक सम्प्रदायों का। अशोक स्वयं यवनों के प्रदेश का जिक्र करता है जहां न तो ब्राह्मण और ना ही श्रमण संस्कृति प्रचलन में थी। इसके अतिरिक्त साम्राज्य के कई जन-जातीय या आदिवासी क्षेत्रों में भी ब्राह्मणवाद या असनातनी सम्प्रदायों का प्रभाव नहीं था। इन सारी विभिन्नताओं के बीच साम्राज्य के अस्तित्व और परस्पर सौहार्द को बनाये रखने के लिए समाज की समस्याओं के प्रति एक समरूपी समझ और व्यवहार की आवश्यकता थी।

17.4.2 *धम्म* के तत्व

धम्म के सिद्धांत इस प्रकार से प्रतिपादित किए गए थे कि वे सभी समुदायों और धार्मिक संप्रदाय के व्यक्तियों को स्वीकार्य हो। *धम्म* को औपचारिक रूप से व्याख्यायित अथवा संरचनाबद्ध नहीं किया गया था। इसमें सहिष्णुता तथा सामान्य आचरण का आदेश दिया गया है। *धम्म* ने दुहरी सहिष्णुता की बात की है। इसमें जनसामान्य के मध्य आत्मसहिष्णुता तथा विभिन्न विचारों एवं आस्थाओं के बीच सहिष्णुता का आहवान किया गया हैं, इसमें दासों एवं नौकरों के प्रति सहानुभूति, बड़ों का आदर, तथा ज़रूरतमंदों, ब्राह्मण व श्रमण सभी के प्रति उदारता आदि पर भी बल दिया गया है। अशोक ने सभी धार्मिक संप्रदायों के बीच सहिष्णुता का आहवान किया।

धम्म नीति में *अहिंसा* पर भी बल दिया गया है। *अहिंसा* को व्यवहारिक स्वरूप युद्ध एवं विजय अभियान का परित्याग करके दिया जाना था। *अहिंसा* का पालन पशुओं की हत्या पर नियंत्रण करके भी किया जाता था। *अहिंसा* का अर्थ पूर्ण *अहिंसा* नहीं था। अशोक यह समझता था कि अपनी राजनैतिक शक्ति के प्रदर्शन के बिना जंगली आदिम जातियों पर नियंत्रण नहीं रखा जा सकता था।

धम्म नीति में कुछ कल्याणकारी कार्य जैसे – वृक्षारोपण, कुंए खोदना आदि की चर्चा की गई है। अशोक ने धर्मानुष्ठानों तथा बलि चढ़ाने को अर्थहीन कहकर उस पर प्रहार किया। *धम्म महामात्ता* के नाम से कुछ अधिकारी भी *धम्म* की नीति के विभिन्न पक्षों को लागू करने तथा उनका प्रचार करने के लिए नियुक्त किए गए। अशोक ने समाज के विभिन्न वर्गों के बीच अपना संदेश पहुंचाने के लिए इन *धम्म महामात्तों* पर भारी दायित्व डाला। किंतु धीरे-धीरे यह *धम्म महामात्त* समूह *धम्म* के पुरोहितों के रूप में परिवर्तित हो गये। इन्हें अत्यधिक अधिकार प्राप्त थे। फलतः शीघ्र ही यह समूह राजनीति में हस्तक्षेप करने लगा।

वृहद् शिलालेख 13 अशोक की *धम्म* नीति को समझने में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इसमें युद्ध के स्थान पर *धम्म* द्वारा विजय प्राप्त करने का आहवान है। यह अशोक के युद्ध के विरूद्ध विचार हैं। इनमें युद्ध की त्रासदी का विस्तृत वर्णन किया गया है और इससे

संकेत मिलता है कि वह युद्ध का विरोधी क्यों बन गया? प्राचीन युग की यह अनोखी घटना है क्योंकि उस समय कोई ऐसा शासक नहीं था जो युद्ध का विरोध कर सका हो। इस युद्ध के बाद अशोक ने *धम्म* नीति अपनायी।

17.4.3 अशोक की *धम्म* नीति और मौर्य राज्य

अशोक की *धम्म* नीति केवल गूढ़ वाक्यों पर ही समाप्त नहीं होती थी। उसने इसे राज्यगत नीति के रूप में अपनाने का भरसक प्रयास भी किया। उसने घोषणा की ''सभी जन मेरे बच्चे हैं'' तथा ''मैं जो भी कार्य करता हूँ वह केवल उस ऋण को उतारने का प्रयास है तो सभी जीवों का मुझ पर है''। यह सर्वथा नया तथा शासन व्यवस्था का उत्साहवर्धक आदर्श था। *अर्थशास्त्र* के अनुसार राजा पर किसी का ऋण नहीं होता। उसका एकमात्र कार्य राज्य पर सक्षम शासन करना है।

अशोक ने युद्ध तथा हिंसात्मक विजयों की निंदा की तथा पशुओं की अधिक हत्या पर प्रतिबंध लगा दिया। स्वयं अशोक ने राजपरिवार में मांस खाने की परंपरा लगभग समाप्त करके शाकाहार का उदाहरण प्रस्तुत किया। चूंकि वह, प्रेम एवं विश्वास द्वारा विश्व विजय प्राप्त करना चाहता था, इसलिए उसने *धम्म* के प्रचार के लिए दल भेजे। इस प्रकार के दल मिस्र, यूनान, श्रीलंका आदि दूरस्थ स्थानों पर भेजे गए। *धम्म* के प्रचार में जन-कल्याण के कई कार्य सम्मिलित थे। मनुष्यों एवं पशुओं के लिए चिकित्सालय, साम्राज्य के अंदर तथा साम्राज्य के बाहर दोनों ही स्थानों पर बनाए गए। छायादार कुंज, कुएं, फल के बगीचे, विश्रामगृह आदि बनाए गए। इस प्रकार के कल्याणकारी कार्य *अर्थशास्त्र* में वर्णित राजाओं की तुलना में, जो कि अधिक राजस्व प्राप्त करने की संभावना के बिना एक पैसा भी खर्च नहीं करते थे, मूल रूप से भिन्न मार्ग थे। अशोक ने व्यर्थ बलि चढ़ाने की परंपरा तथा ऐसे समारोह जिनके कारण व्यय, अनुशासनहीनता तथा अंधविश्वास पैदा होता था, पर प्रतिबंध लगा दिया। इन नीतियों के कार्यान्वयन के लिए उसने *धम्म महामात्तों* की नियुक्तियां की। इन *धम्म महामात्तों* का एक कार्य यह भी था कि वे इसका ध्यान रखें कि सभी संप्रदाय के लोगों के साथ उचित व्यवहार हो रहा है। उन्हें बन्दियों के कल्याण के प्रति विशिष्ट दायित्व सौंपा गया था। बहुत सारे बंदी जो कि कारावास की अवधि समाप्त होने के पश्चात् बेड़ियों में रखे गए थे, उन्हें मुक्त करने का आदेश था। मृत्यु दंड प्राप्त बन्दियों को तीन दिन का जीवनदान दिए जाने का आदेश था। स्वयं अशोक ने *धम्म* यात्राएं आरंभ की। वह तथा उसके साथ के उच्च अधिकारी *धम्म* के प्रचार तथा जनता के साथ सीधा संपर्क बनाने के लिए देश भ्रमण पर निकले। अपनी इसी नीति के कारण अशोक को कर्न (Kern) जैसे आधुनिक लेखक ने राजा की पोषाक में भिक्षु कहा है।

17.4.4 *धम्म*-व्याख्यायें

अशोक की *धम्म* की नीति विद्वानों के बीच वाद-विवाद का विषय रही है। कुछ विद्वानों के अनुसार अशोक बौद्ध मत का पक्षपाती थी। वे उसकी *धम्म* नीति और बौद्ध मत को एकरूपी मानते हैं।

ऐसा भी विचार व्यक्त किया गया है कि अशोक मौलिक बौद्ध विचारों को *धम्म* के रूप में परिभाषित कर रहा था तथा बाद में कुछ नये धार्मिक तत्वों के साथ इन्हें बौद्ध मत का रूप दे दिया गया। इस प्रकार के विचारों का आधार बौद्ध वृतांत है। ऐसा विश्वास है कि कलिंग युद्ध एक ऐसा नाटकीय मोड़ था जिसने युद्ध में मृत्यु एवं विनाश के लिए पछतावे के कारण अशोक को भारत तथा विदेशों में बौद्ध मत का अनुयायी बना दिया। बौद्ध वृतांतों में भी अशोक को भारत तथा विदेशों में बौद्ध मत के प्रचार का श्रेय दिया गया है। अशोक के

विरूद्ध पक्षपात का आरोप लगाना ठीक नहीं है। इस बात के दो अत्यंत महत्वपूर्ण प्रमाण है कि अशोक ने राजा के रूप में, बौद्ध धर्म के प्रति अन्य धर्मों की तुलना में पक्षपात नहीं किया।

1) अशोक द्वारा *धम्म महामात्तों* का एक विभाग बनाना इस तथ्य को पूर्णतः प्रमाणित करता है कि अशोक किसी धर्म विशेष का पक्षपाती नहीं था। यदि ऐसा होता तो इस विभाग की आवश्यकता ही न पड़ती क्योंकि वह *धम्म* के प्रचार के लिए संघ के संगठन का उपयोग कर सकता था।

2) शिला-लेखों के ध्यानपूर्वक अध्ययन से पता चलता है कि अशोक सभी धार्मिक संप्रदायों के बीच सहिष्णुता एवं आदर का भाव फैलाना चाहता था तथा *धम्म महामात्तों* का दायित्व था कि वे ब्राह्मणों एवं श्रमणों के लिए कार्य करें।

इन दो बातों से पता चलता है कि *धम्म* की नीति किसी विधर्मी की नीति नहीं थी अपितु विभिन्न धार्मिक स्रोतों से ग्रहण किए गए विश्वासों की एक पूरी व्यवस्था है।

रोमिला थापर ने स्पष्ट किया है कि अशोक की *धम्म* की नीति न केवल मूलभूत मानवीयता की अद्भूत दस्तावेज़ है बल्कि उस समय की सामाजिक-राजनैतिक आवश्यकताओं का उपयुक्त समाधान भी प्रस्तुत करती है। यह ब्राह्मण विरोधी नीति नहीं थी जिसका प्रमाण यह है कि सभी *धम्म* अभिलेखों में ब्राह्मण तथा श्रमणों के प्रति आदर का भाव अनिवार्य रूप से उल्लेखित हैं। *अहिंसा* पर उसके बल देने का तात्पर्य यह नहीं था कि उसने राज्य की सुरक्षा की आवश्यकताओं के प्रति आंखें मूंद ली थीं। फलतः वह आदिवासी समूहों को चेतावनी भी देता है कि यद्यपि वह बल प्रयोग से घृणा करता है परंतु यदि वे समस्याएं उत्पन्न करना बंद नहीं करते हैं तो शक्ति का प्रयोग करने पर बाध्य होना पड़ेगा। अशोक ने जब युद्ध करना बंद किया तब तक पूरा भारतीय उप-महाद्वीप उसके नियंत्रण में था। दक्षिण में वह चोल तथा पांड्य आदि राज्यों से मित्रता बनाए हुए था। श्रीलंका उसका प्रशंसक तथा सहयोगी था। अतः अशोक ने युद्ध का विरोध उसी समय किया जबकि उसका साम्राज्य अपनी प्राकृतिक सीमाओं को छू चुका था। जातीय विविधता एवं धार्मिक विभिन्नता तथा वर्गीय आधार पर विभाजित समाज में सहिष्णुता का आह्वान बुद्धिमत्ता का कार्य था। अशोक का साम्राज्य विविध समूहों का एक समग्रीकृत रूप था। इस साम्राज्य में किसान, खानाबदोश, चरवाहे, आखेट जीवी तथा यूनानी, कम्बोज, भोज एवं अनेक प्रकार की परम्पराओं के अनुयायी सैकड़ों समूह थे। ऐसी परिस्थिति में सहिष्णुता की बात करना युग की आवश्यकता थी। अशोक ने संकीर्ण सांस्कृतिक परम्परा के स्थान पर व्यापक नैतिक सिद्धांतों की स्थापना करना चाही। अशोक की *धम्म* की नीति उसकी मृत्यु के बाद आगे न चल सकी। वैसे भी यह नीति सफल नहीं रही थी फिर भी हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि अशोक किसी नये धर्म की स्थापना नहीं कर रहा था। वह केवल समाज के अन्दर मानवतावादी और नैतिक सिद्धांतों की स्थापना करना चाहता था। मोटे तौर पर यह मानवतावादी सिद्धांत भारतीय परंपरा का अंग बन चुके हैं।

बोध प्रश्न 1

1) अशोक की *धम्म* नीति के सिद्धांत की ऐतिहासिक पृष्टभूमि पर लगभग दस पंक्तियों में लिखिए।

....

....

....

2) *धम्म* की नीति के मुख्य सिद्धांत क्या थे?

....

....

....

....

....

....

3) *धम्म* के संबंध में व्याख्याओं को सूचीबद्ध कीजिए।

....

....

....

....

....

....

17.5 मौर्यकला एवं वास्तुकला

मौर्यकला एक लम्बें आन्दोलन की परिणति थी जो देशी रूप से शुरू हुई, समय के साथ-साथ फली-फूली और फैली और इसके साथ-साथ इसने विभिन्न संवेगों और प्रभावों को ग्रहण किया। मौर्यो के काल से पहले मूर्तिकला और वास्तुकला के कोई उदाहरण नहीं हैं। मूर्तिकला और वास्तुकला के संदर्भ में हमारे पास जो कुछ भी है वह मुख्य रूप से अशोक के शासनकाल के मौर्यकाल का है।

निहरंजन रे जैसे विद्वानों को लगता है कि मौर्यकालीन कला इस मायने में पहले की कला परम्पराओं से अलग थी कि इसने लकड़ी, सूरज की रोशनी में पकाई सूखी ईटों, मिट्‌टी, हाथी-दांत, और धातु से अलग हटकर विशाल परिमाण के पत्थरों का उपयोग किया। यह संभावना है कि मौर्यकालीन कलाकारों ने हजारों सालों से भारत की भूमि पर मौजूद लकड़ी के साथ काम करने की कला को फिर से दोहराया। स्तुपों के कटघरे, प्रवेश-द्वारा और चैत्य का अग्रभाग सभी उस तरह के अलंकरण को दर्शाते हैं जो लकड़ी के आद्यकलारूपों की एक प्रतिलिपि लगते हैं। हालाँकि रे का मानना है कि जिस तरह से मौर्यकालीन कारीगरों ने शिला पर काम करने की महारत हासिल की उसे इस चीज से समझना बहुत मुश्किल है कि लकड़ी की कलाकृतियों, चाहे जितनी भी बड़ी और भव्य रही हों और चाहे उन्हें जितनी भी तकनीकी कौशल और सूक्ष्मता से बनाया गया हो परन्तु वह मौर्यकालीन शिला कलाकृतियों जैसी नहीं हैं।

मौर्यकला की दूसरी विशेषता इसका एकेमेनिड से संबंध था। चन्द्रगुप्त मौर्य के अधीन क्षेत्र का प्रभुत्व अफ़ग़ानिस्तान को छूता था और तत्कालीन एकेमेनिड अधिकृत क्षेत्रों के पास था। मौर्य राजाओं के युनानी दरबार से भी घनिष्ट संबंध थे। कला के क्षेत्र में युनानी कला ने एकेमेनिड कला परम्पराओं से तत्व ग्रहण किये और यह उनसे काफ़ी अधिक प्रभावित थी। विद्वान महसूस करते हैं कि मौर्यों के पूर्वी युनान से करीबी संपर्कों ने उन्हें एकेमेनिड कला और संस्कृति के साथ अप्रत्यक्ष संपर्क में आने में भी मदद की होगी। इस प्रकार मौर्य कला

एकेमेनिड प्रभावों को दर्शाती है। पाटलीपुत्र शहर के अवशेष ना केवल सुसा और एकबटाना की याद दिलाते हैं, बल्कि कुम्रहार में स्तम्भों पर खड़े सभामंडप की तुलना डेरियस महान द्वारा निर्मित सौ स्तम्भों वाले हॉल से की जा सकती है। इसके अलावा, अशोक के स्तम्भ और उनके शिलालेखों से यह साबित होता है कि वे एकेमेनिड प्रथा से प्रेरणा पाते थे।

हालाँकि, एक अन्य मत का विचार है कि मौर्यकला के तत्व मूलतः देशी थे। यह लोक और दरबारी तत्वों का एक सुखद सम्मिश्रण था। यह लोक लकड़ी का स्तंभ था जो जड़वत हो गया था। यहाँ तक कि प्रसिद्ध मौर्यकालीन पोलिश की शुरुआत पूर्व मौर्य काल में थी। इसके अलावा, अशोक स्तम्भों में उपयोग किये जाने वाले बैल, सिंह, कमल, हंस के रूपान्कन देशी पूर्ववर्ती उदाहरण थे। इसलिए, कला के इतिहास में एक घटना की बजाए, मौर्य कला परंपरा की एक निरंतरता थी जो वेदों जितनी ही पुरानी थी। अशोक के घंटाकृति वाले स्तम्भ और घंटाकृति की प्रेरणा का स्रोत 'परसेपोलिटन' था। हालाँकि देवाहुति का मानना है कि वे फारसी मॉडल की नकल नहीं थे। फारसी और अशोक की कला के उदाहरणों से पता चलता है कि उनकी सजातीयता उनके पश्चिम एशियाई पूर्वजों-आर्यों में उनकी उत्पत्ति के कारण है। इसके अलावा, स्तम्भ वास्तुकला, जिसकी शुरुआत लकड़ी से हुई थी अब एक नये माध्यम पत्थर में बदल गई। धीरे-धीरे इसने सदन और आधार प्राप्त कर लिए। शाफ्ट भी आठ या सोलह पक्षीय की हो गयी। कार्ले, बेडसा, नासिक, कन्हेरी (दूसरी शताब्दी बी.सी.ई. से दूसरी शताब्दी सी.ई. तक), अजन्ता गुफा संख्या XIX, एलोरा (छठी से आठवीं शताब्दी सी.ई.) की गुफाओं में पाए गए स्तम्भ इन परिवर्तनों को दर्शाते हैं, जबकि अनेक स्तम्भ अभी भी मौर्य काल की विशेषताओं को संजोए हुये हैं। शीर्ष (capital) जिस पर कुल्हे से नीचे गोजातीय शरीर वाली स्त्री आकृति (भाजा); हाथी और अश्व (बेडसा); अलंकृत सिंह (कार्ले), उनकी भाव भांगिमा और व्यवस्था प्रसिपोलिस की याद दिलाती है, लेकिन वे भारतीय भूमि की उतनी ही उपज है जितनी कमल और स्वस्तिक के रूपांकन।

17.5.1 मौर्य कला के उदाहरण

मौर्य कालीन कला के सबसे महत्वपूर्ण उदाहरणों में शामिल हैं:

1) शाही महल और पाटलिपुत्र शहर के अवशेष।
2) सारनाथ में अखंड वेदिका।
3) गया में बराबर-नार्गाजुनी पहाड़ियों में उत्कीर्ण चैत्य हाल या गुफा वास।
4) राजाज्ञा धारण करते हुए और बिना राजाज्ञा वाले स्तंभ व उसके शीर्ष (capitals)।
5) उडिशा के धौली में एक चट्टान से तराशा गया गोलाकार रूप में एक हाथी के सामने का आधा हिस्सा।

कला के उपयुक्त तत्वों में कुछ सामान्य तत्व मौजूद हैं। यह हैं: सभी अवधारणा और ड़िजाइन की दृष्टि से भव्य हैं: उत्कृष्ट सुव्यवस्थित, और निष्पादन में सटीक। पाटलीपुत्र के शाही महल और शहर की इमारतों के अवशेषों के अपवाद को छोड़कर, वे सभी विशाल अनुपात के भूरे रंग के बलुवा पत्थर से बने हैं, उनको खूबसूरती से छेनी से काटा हुआ है और वे एक उच्च चमक को दर्शाते हैं। यह सब शाही कला के उदाहरण हैं जो सम्राट अशोक और उनके उत्तराधिकारियों के साथ जुड़े हुए हैं।

पाटलिपुत्र

मौर्य राजधानी पाटलीपुत्र शाही कला को दर्शाती है। मेगस्थनीज के अनुसार, पाटलिपुत्र

शहर लगभग 15 किलोमीटर लम्बा, 2.5 किलोमीटर चौड़ा, और एक खाई से घिरा हुआ था, जिसका नाप दौ सौ मीटर चौड़ा और पन्द्रह मीटर गहरा था। शहर की प्राचीर में चौसठ द्वार और लगभग पाँच सौ सत्तर बुर्ज थे। खुदाई से प्राचीन शहर के एक छोटे से भाग का पता चला है क्योंकि इसमें से अधिकांश पर अब आधुनिक आवास का कब्जा है। इसके अलावा, अधिकांश संरचनाएँ संभवतः लकड़ी और ईंट से बनी थी जो बाढ़ और समय के थपेड़ों से जीवित नहीं बची हैं। दो स्थलों को आंशिक रूप से खोजा गया है – बुलंदीबाग और कुम्रहार। बुलंदीबाग में लकड़ी के विशाल कटघरे के अवशेष और किलेबन्द दीवारों का पता लगाया गया है। कुम्रहार में एक ऊँची ईंट की दीवार के भीतर मौर्य महल परिसर के अवशेष पाए गए हैं। अस्सी पत्थरों के स्तम्भों के अवशेष मिले हैं जिन पर अत्यधिक पोलिश की गई है, जिन पर एक लकड़ी की अधिरचना टिकी हुई थी जिसका आधार भी लकड़ी का था। देवाहुति द्वारा परसेपोलिस के सौ स्तम्भों वाले हॉल और मौर्य महल के बीच अंतरों को बताया गया है। हालाँकि दोनों ने स्तंभित हॉल और चमकीली पोलिश की अवधारणा को साझा किया, लेकिन ग्रीक लेखकों के अनुसार ऐसा वर्णन है कि चन्द्रगुप्त के समय के लकड़ी के स्तम्भों को ''चारों ओर लताओं के साथ सोने से उभारा हुआ और पक्षी और पर्णसमूह के डिजाइन के साथ सजाया हुआ था। एकबटाना के दरबारों के बारे में कहा गया है कि वे 'सभी चाँदी की प्लेट से ढ़के हुए थे'। मौर्य महल के स्तम्भों की बनावट की सादगी जेरक्स के एकेमेनिड स्तम्भों से भिन्न है। स्तंभ का मूठ (shaft) बिना आधार व शीर्ष के है, सादे एवं अखंड है, इसकी तुलना में एकेमेनिड के स्तम्भ पर नालीदार कारीगरी है व एक आधार और विस्तृत सदन के साथ कई खंडों से मिलकर बने हैं। चमकदार पोलिश के भारत और पश्चिम एशिया दोनों में पूर्ववर्ती उदाहरण मौजूद थे।

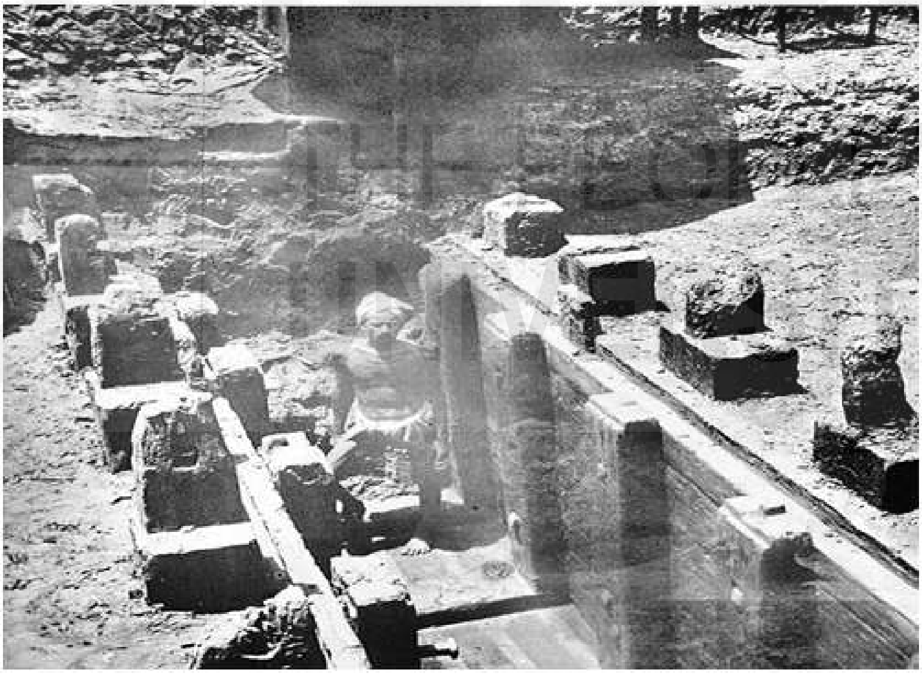

मौर्यकाल में पाटलिपुत्र में बुलन्दीबाग स्थल पर लकड़ियां का कटघरा।
श्रेयः ए एस आई इ सी 1912-13 स्रोतः विकिमीडिया कॉमन्स (https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Mauryan_remains_ of_wooden_palissade_ at_Bulandi_Bagh_site_of_ Pataliputra_ASIEC_1912-13.jpg)

शिलालेख और स्तम्भ

मौर्यकालीन स्तम्भ स्वतन्त्र रूप से खड़े, उचित अनुपात वाले, शंकू रूपी लम्बें और पतले और अखंड हैं। वे बलुआ पत्थर के बने हैं। जिसका उत्खनन चुनार की खानों में होता था।

स्तम्भों पर एक चमकदार पोलिश है। उनका कोई आधार नहीं है। शीर्ष को शाफ्ट के शकूंनुमा सिरे से एक बेलनाकार पेंच द्वारा जोड़ा गया है। शीर्ष उल्टे कमल के आकार में है। इसके ऊपर एक चौकी (मंच) है जो अन्त में गोलाकार है और एक तराशे गये जानवर की आकृति को सहारा देती है।

अशोककालीन शिलालेखों के जो स्तम्भ हैं, वे दिल्ली-मिरात, इलाहाबाद (आज का प्रयागराज), लौरिया-अराराज, लौरिया-नन्दनगढ़, रामपूरवा (सिंह शीर्ष के साथ), दिल्ली-टोपरा, संकिसया, सांची और सारनाथ में मिले हैं। बिना शिलालेख वाले स्तम्भों में रामपूरवा (एक बैल शीर्ष के साथ), बसरा-बंखीरा (एक एकल सिंह शीर्ष के साथ) और कोसम शामिल हैं। रुमिनडैं और निगाली सागर में समर्पणात्मक अभिलेखों वाले स्तम्भ पाये गये हैं। इनमें से लौरिया-नन्दनगढ़ और बसरा-बंखीरा के शीर्ष स्वस्थानी हैं। रामपूरवा, संकिसया, सारनाथ और सांची में ये क्षतिग्रस्त हालत में बरामद हुए हैं। लौरिया-नन्दनगढ़ और बसरा बंखीरा के स्तंभ शीर्ष पर और रामपूरवा में एक सिंह की आकृति बनी है। संकिसया का स्तम्भ एक खड़े हाथी को सहारा देता है; दूसरा रामपुरवा का स्तम्भ एक खड़े बैल को; और सारनाथ और सांची के स्तम्भों में चार सिंह एक-दूसरे की तरफ़ पीठ करके बैठे हैं। लौरिया-अराराज स्तम्भ में एक गरूढ़ की आकृति हो सकती है। अश्व को छोड़कर, अन्य प्रतीक प्रारंभिक ब्राह्मणवादी कल्पना में बहुत अधिक मौजूद है।

रूपनाथ और ससाराम के अभिलेखों को पढ़ने और VII स्तम्भ शिलालेख से यह स्पष्ट है कि अशोक के अभिलेखों वाले कुछ स्तम्भों का काल मौर्य से पहले का हो सकता है इसलिए, विशेषरूप से इनका चरित्र बौद्ध नहीं है। कुछ स्तम्भों को स्वयं अशोक ने धर्म-स्तम्भों के रूप में निर्मित कराया था।

चित्रः सारनाथ के स्तंभ के शीर्ष पर सिंह की आकृति
श्रेयः क्रिसि 1964
स्रोतः विकिमीडिया कॉमन्स (https://en.wikipedia.org/wiki/File:Sarnath_capital.jpg)

भारत, छठी शताब्दी बी.सी.ई. से 200 बी.सी.ई. तक

चित्र: एक खड़ी अवस्था में देवी के साथ मौर्यकालीन रिंगस्टोन। उत्तर पश्चिमी पाकिस्तान
श्रेय: ब्रिटिश म्यूज़ियम
स्रोत: विकिमीडिया कॉमन्स (https://commons.wikimedia.org/wiki/File:MauryanRingstone.JPG)

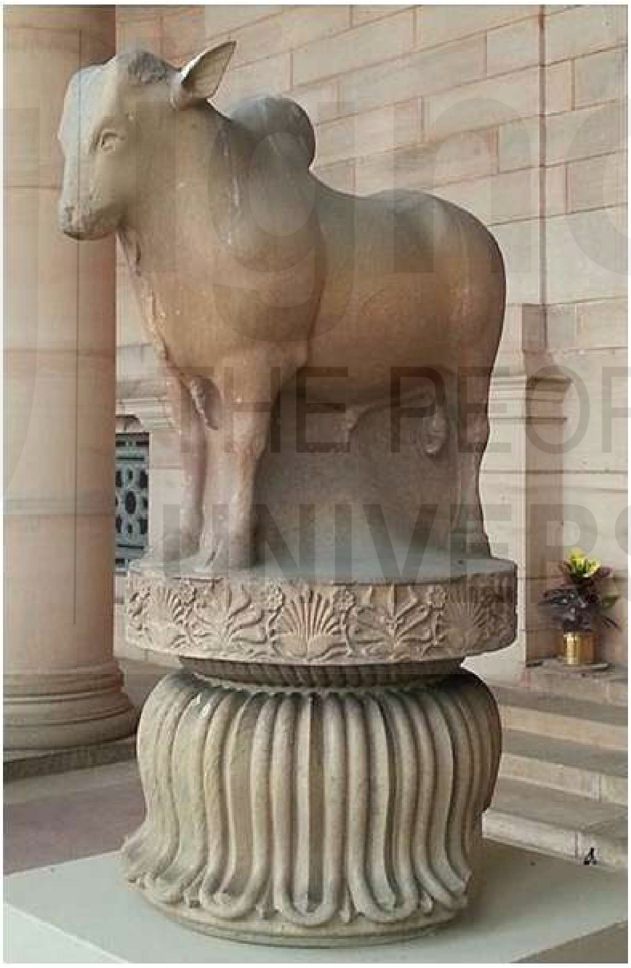

चित्र: रामपूरवा के स्तंभ पर बैल की आकृति जो अब राष्ट्रपति भवन में है।
श्रेय: एम. अमिताव घोष
स्रोत: विकिमीडिया कॉमन्स (https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Rampurva_bull_in_Presidential_Palace_high_closeup.jpg)

हालांकि स्तम्भ और उनके शीर्ष पत्थर के हैं, लेकिन वह आदिम लकड़ी के पशुमानकों की प्रति-लिपियाँ थी, इसके अलावा जीवित उदाहरण एक एकीकृत तस्वीर पेश नहीं करते हैं, पत्थर, पोलिश या पोलिश का अभाव, अनुपात, मूर्तिकला के विवरणों के तरीकों, गिट्टक लगाने की तकनीक और यहाँ तक कि भूमि में सन्निवेश के तरीकों में बहुत भिन्नता है।

विद्वानों ने स्तम्भों में मौजूद प्रतीकवाद को समझने की कोशिश की है। जॉन इरविन के अनुसार, स्तम्भ विश्व धूरी का प्रतीनिधित्व करते हैं। प्राचीन संस्कृतियों में, विश्व धूरी एक ऐसा साधन था जिसने ब्रह्मांड के निर्माण के दौरान पृथ्वी को स्वर्ग से अलग कर दिया। स्तम्भ ब्रह्ममाणड़ीय महासागर से निकलता हुआ दिखाई देता है और आसमान तक पहुँचता है, जहाँ इसे सूर्य की किरणों द्वारा स्पर्श किया जाता है। अशोक के स्तम्भों में आधार नहीं है और वे सीधे भूमि में गड़े हैं। ऐसा प्रतीत होता है मानो वे धरती से निकलकर आकाश को छू रहे हों।

चित्रः रामपुरवा की सिहं की शीर्ष आकृति
श्रेयः बिस्वारूप गांगुली
स्रोतः विकिमीडिया कॉमन्स https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Lion_Capital_-_Chunar_Sandstone_-_Circa_3rd_Century_BCE_-_Rampurva_-_ACCN_6298-6299_-_Indian_Museum_-_Kolkata_2014-04-04_4432.JPG)

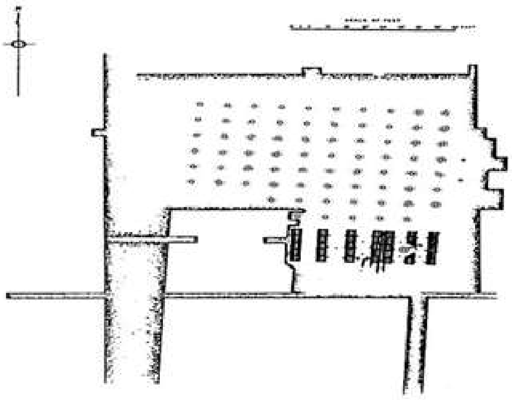

कुम्रहार में अस्सी स्तम्भों वाले हॉल की योजना। एएसआईईसी 1912-13।
श्रेयः डेविड बी. स्पूनर
स्रोतः विकिमीडिया कॉमन्स (https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Kumhrar_Maurya_level_ASIEC_1912-1913.jpg)

चित्र 17.1: धौली में पत्थर का हाथी।
श्रेयः कुमार शक्ति। ए एस आई स्मारक सं. एन-ओआर-59
स्रोतः विकिमीडिया कॉमन्स (https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Elephant-sculpture-dhauli.JPG)

चित्रः मौर्यकालीन पोलिश को दर्शाता लोहानीपुर धड़।
श्रेयः एचपी गोआ
स्रोतः विकिमीडिया कॉमन्स (https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Lohanipur_torso.jpg)

सारनाथ में अखंड रेलिंग

सारनाथ में एक अखंड रेलिंग के पोलिश किए टुकड़े को मौर्यकाल का माना गया है। यह चुनार के पोलिश किए बलुआ पत्थर से बना है। इसकी तुलना भारहुत रेलिंग से की जाती है। यह समकालीन लकड़ी की मूल प्रतियों की नकल है। आलम्बन, स्तम्भ और उर्ध्वाधर दण्ड या सूचियाँ और ऊपर का पत्थर या (उशनिष) सभी को एक एकल अखंड पत्थर से बनाया गया है।

धौली का हाथी

धौली (भुवनेश्वर, उडिशा) में, एक हाथी के सामने के भाग की एक चट्टान पर तराशी गयी मूर्ति है। इसकी एक भारी सूंड है जो सुन्दर रूप से अन्दर की और घूमी हुई है। उसका दाहिना आगे का पैर थोड़ा झुका हुआ है और एक बायां पैर थौड़ा मुड़ा हुआ है, जो आगे की गति को दर्शाता है। पत्थर में इसकी स्वाभाविक मुद्रा को शक्तिशाली चित्रण बहुत ही प्रभावशाली है और ऐसा एहसास दिलाना है कि मानो हाथी चट्टान से निकल रहा है।

शैलकर्तित गुफाएं

मौर्य काल ने शैल कर्तित (रॉक कट) वास्तुकला की शुरुआत देखी। यह गुफाएँ नागार्जुनी और बराबर पहाड़ियों में बोधगया के उत्तर में स्थित हैं। बराबर पहाड़ियों में तीन गुफाओं में अशोक के समर्पित शिलालेख हैं और नागार्जुनी पहाड़ियों में उनके उत्तराधिकारी दशरथ के शिलालेख हैं। गुफाओं के बाहरी भाग बहुत सादे हैं। हालाँकि, आन्तरिक भागों पर उच्च स्तर की पोलिश की हुई है। इन गुफाओं में सबसे प्रारंभिक सुदामा गुफा है जिसमें एक अभिलेख है जो अशोक के शासन काल के बारहवें वर्ष का है। और यह आजीवक सम्प्रदाय को समर्पित है। इसमें दो कक्ष है : (क) एक आयाताकार उपकक्ष जिसकी बेलनाकार मेहराब वाली छत है, और जिसके द्वार मार्ग में तिरछे चौखट है, (ख) एक पृथक गोलाकार कक्ष जो हाल के अन्त में है और एक अर्ध गोलाकार गुम्बद वाली छत के साथ है। गुम्बद वाली छत फूस वाली छप्पर की नकल है।

चित्र 17.2: लोमश ऋषि प्रवेश द्वार
श्रेयः फोटो धर्मा, पेनांग से, मलेशिया
स्रोतः विकिमीडिया कॉमन्स (https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Lomas_Rishi_relief.jpg)

कालक्रमिक दृष्टि से सबसे बाद का और वास्तुशिल्प की दृष्टि से लोमस ऋषि गुफा (चित्र 17.2) सबसे अच्छा नमूना है जिसकी धरातल योजना और सामान्य डिजाइन सुदामा गुफा के समान है। इसमें एक उपकक्ष है जिसकी बेलनाकार मेहराब वाली छत है, और जिसके द्वार मार्ग में तिरछे चौखट हैं। उपकक्ष के अन्त में एक गोलाकार कक्ष है। द्वार पर उभरी नक्काशी की मूर्तिकला अलंकरण सबसे विशिष्ट विशेषता हैं। द्वार मार्ग के ऊपर एक नक्काशीदार स्तूपिका के साथ एक चैत्य या एक गवाक्ष मेहराब दर्शाया गया है। उत्कीर्ण नक्काशियों के दो समूह हैं: उपरी में जालीदार काम है और निचले भाग में एक बारीक नक्काशीदार चित्रवल्लरी है जो हाथियों को स्तूप की तरफ़ जाते दिखा रहा है। चित्रवल्लरी के दोनों छोरों पर एक मकर (एक पौराणिक मगरमच्छ) है।

मौर्य कला इस प्रकार दक्षिण एशियाई क्षेत्र में कला के एक लम्बें आंदोलन की देन है। वे निस्संदेह एक शाही पहल का परिणाम थे, लेकिन इनका मूल भारतीय भूमि में ही बहुत अधिक निहित था। स्तंभ, गुफायें, डिजाइन सभी लकड़ी के मूल रूपों के पत्थर में नकल का प्रतिनिधित्व करते हैं।

17.6 साम्राज्य का विघटन

मौर्य शासन भारत में साम्राज्यवादी सरकार की दिशा में प्रथम प्रयोग था। लेकिन 232 बी.सी.ई. में अशोक की मृत्यु के साथ मौर्यों का साम्राज्यवादी प्रभुत्व कमज़ोर पड़ने लगा और 180 बी.सी.ई. में यह समाप्त हो गया। आगे मौर्य साम्राज्य के विघटन के कारणों के बारे में अध्ययन करें।

17.6.1 अशोक के उत्तराधिकारी

सामान्यतः यह विश्वास किया जाता है कि अशोक की मृत्यु 232 बी.सी.ई. में हुई। फिर भी, अशोक की मृत्यु की आधी सदी के बाद तक मौर्य शासकों का शासन चलता रहा। अशोक के उत्तराधिकारियों के विषय में *पुराणों, अवदान* और जैन ग्रंथों में अलग-अलग वर्णन मिलता है। इन सभी वर्णनों पर संदेह इसलिए होता है क्योंकि इन सभी स्रोतों में विभाजित साम्राज्य की परिस्थितियों का वर्णन किया हुआ है। ऐसा कहा जाता है कि अशोक की मृत्यु के बाद साम्राज्य का विभाजन उसके जीवित पुत्रों के बीच कर दिया गया था। अशोक के उत्तराधिकारियों के विषय में जो वर्णन दिया हुआ है, उसके अनुसार उनमें कुछ के नाम इस प्रकार है – कुणाल, दशरथ, समप्रति, सलिशुका, देववर्मन, सतधनवान्, ब्रिहद्रथ। परन्तु उनके शासनकाल का ठीक से निर्धारण करना कठिन काम है। लेकिन एक बात स्पष्ट है कि अशोक के बाद साम्राज्य विभाजित हो गया था और उनके शासक अल्पावधि के लिए उत्तराधिकारी बने। जल्दी-जल्दी शासकों में परिवर्तन होने के कारण प्रशासन पर साम्राज्यवादी नियंत्रण कमज़ोर पड़ने लगा। प्रारंभिक तीन सम्राटों – चन्द्रगुप्त मौर्य, बिन्दुसार एवं अशोक ने प्रशासन को इस ढंग से संगठित किया था कि उस पर लगातार कठोर नियंत्रण बनाए रखने की आवश्यकता थी। राजाओं में जल्दी-जल्दी परिवर्तन होने के कारण कोई भी ऐसा शासक नहीं हुआ जो साम्राज्य के सम्मुख उभरती समस्याओं का हल कर पाता और प्रशासन पर नियंत्रण बनाए रखता। इसको इस तथ्य के साथ भी जोड़ा जा सकता है कि वंशीय साम्राज्य शासकों की व्यक्तिगत योग्यता पर निर्भर करते हैं। लेकिन अशोक के उत्तराधिकारी अपनी योग्यता को सिद्ध करने में असफल रहे। उनमें से प्रत्येक ने बहुत थोड़े समय के लिए शासन किया, जिसके कारण न वे शासन करने की नई नीतियों का निर्धारण कर सके और न पुरानी नीतियों को बरकरार ही रख सकें। साम्राज्य का विभाजन इस बात का स्पष्ट साक्ष्य है कि विघटन की प्रक्रिया का प्रारंभ अशोक की मृत्यु के तुरन्त बाद ही प्रारंभ हो गया था।

17.6.2 विघटन के अन्य राजनीतिक कारण

अशोक की मृत्यु के पश्चात् प्रशासनिक प्रणाली में जो अव्यवस्था उत्पन्न हुई, उसको मौर्य साम्राज्य के विघटन के लिए उत्तरदायी महत्वपूर्ण कारणों में से एक कारण बताया गया है। अशोक के उत्तराधिकारियों के सम्मुख तत्काली समस्या यह थी कि अशोक की *धम्म* नीति और सरकार में उसकी सर्वोच्चता को जारी रखा जाए या नहीं। यह स्पष्ट नहीं कि अशोक के आग्रहों के बावजूद उसके उत्तराधिकारियों ने क्या *धम्म* को उतनी ही महत्ता दी, जितनी की अशोक ने दी। *धम्म* के राजनीतिक महत्व से संबंधित एक अन्य विशेषता यह भी थी कि

एक बड़ी संख्या उन राज्य अधिकारियों के अस्तित्व की थी जिनको *धम्म महामात्त* कहा जाता था। कुछ विद्वानों को ऐसा मानना है कि अशोक शासन के उत्तरार्ध में ये अधिकारी बड़े शक्तिशाली एवं दमनात्मक हो गए। इन कर्मचारियों के, जिसका केन्द्र-बिन्दु राजा था, सत्ता से जुड़े होने के कारण अगर कोई कमज़ोर राजा होता था तो सम्पूर्ण प्रशासन स्वाभाविक रूप से कमज़ोर हो जाता। जैसे ही केन्द्र कमज़ोर पड़ा, उसी के साथ प्रांतों ने भी अलग होना प्रारम्भ कर दिया।

अधिकारियों को राजा स्वयं नियुक्त करता था तथा उनकी वफादरी केवल उसके प्रति होती थी। जैसे ही कमज़ोर राजाओं ने सत्ता संभाली और उन्होंने थोड़े-थोड़े समय के लिए प्रशासन किया उससे अधिकारियों की संख्या में लगातार बहुत अधिक वृद्धि होने लगी और इन अधिकारियों की अपने राजाओं के प्रति वफादारी थी न कि राज्य के प्रति। इस प्रकार बाद के मौर्य शासकों के अधीन प्रांतीय सरकारों ने केन्द्र के प्रभुत्व पर प्रश्न चिन्ह लगाना प्रारम्भ कर दिया।

यद्यपि कोई भी इस अवधारणा को स्वीकार नहीं कर सकता कि मौर्य राज्य के नियंत्रण को समाप्त करने के लिए कोई जन विद्रोह हुआ, परन्तु यह बात मज़बूती के साथ कही जा सकती है कि मौर्य नौकरशाही का सामाजिक आधार काफ़ी दबाव एवं तनाव में था जिसकी परिणति एक असक्षम प्रशासन के रूप में हुई, जो सामान्यतः सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखने में असफल रहा। इसी के साथ-साथ प्रारंभिक तीन मौर्य सम्राटों ने भ्रष्ट अधिकारियों के विरूद्ध सूचना प्राप्त करने के लिए एक जटिल गुप्तचर व्यवस्था का संचालन सफलतापूर्वक किया परन्तु बाद के मौर्य राजाओं के शासन काल में यह व्यवस्था धराशायी हो गई। इस प्रकार, राजाओं के पास ऐसा कोई विकल्प नहीं था जिससे कि साम्राज्य की आम जनता के विचारों का अनुमान लगाया जा सके या भ्रष्ट अधिकारियों पर नियंत्रण किया जा सके क्योंकि केंद्रीय सत्ता में कमज़ोर शासकों के आने पर इस प्रकार की गतिविधियां स्वाभाविक थीं। इस स्थिति में हमारे लिए मुख्य रूप से इस बयान पर बल देना आवश्यक है कि मगध साम्राज्य के पतन का संतोषप्रद उत्तर इन बयानों के आधार पर नहीं दिया जा सकता कि उत्तराधिकारी कमज़ोर थे या सेना निष्क्रिय हो गई थी या जन-विद्रोह हुए। वास्तव में इनमें से प्रत्येक एक विशेष स्वरूप वाली मौर्य साम्राज्य की नौकरशाही प्रणाली से जुड़ा था और जब यह टूटना प्रारम्भ हुई तो सम्पूर्ण राजनीतिक व्यवस्था संकट में पड़ गई।

17.6.3 अशोक और उसकी नीतियां

बहुत से विद्वानों का मानना है कि अशोक के राजनीतिक निर्णयों या इन निर्णयों के प्रभावों के कारण मौर्य साम्राज्य का विघटन हुआ।

1) प्रथम इनमें कुछ वे विद्वान हैं जो यह तर्क देते हैं कि पुष्यमित्र शुंग, जिसने अंतिम मौर्य राजा को मारा था, ब्राह्मणवादी प्रतिक्रिया का प्रतिनिधित्व करता है, जो कि अशोक की बौद्ध धर्म के समर्थन की नीति तथा उसके उत्तराधिकारियों की जैन धर्म के समर्थन की नीति के खिलाफ थी। आगे वे तर्क देते हैं कि *धम्म* के विशेष अधिकारियों ''*धम्म महामात्तों*'' जिनकी नियुक्ति अशोक ने की थी, ने ब्राह्मणों की गरिमा को नष्ट किया। इन अधिकारियों ने ब्राह्मणों को परम्परागत दण्ड देने के कानूनों और *स्मृतियों* में दिए गए नियमों को लागू करने से रोका।

   स्पष्टतः उपरोक्त दिए गए तर्कों के समर्थन में साक्ष्य नहीं हैं। अशोक के शिलालेखों से इस प्रकार के साक्ष्य मिलते हैं, जिनके अनुसार अशोक ने *धम्म महामात्तों* को ऐसे निर्देश दिए थे जिससे कि वे ब्राह्मणों एवं श्रमणों, दोनों का सम्मान करें। परन्तु यह

संभव है कि बाद के वर्षों में ये अधिकारीगण आम जनता के बीच अलोकप्रिय हो गए हों। अशोक की नीति के कारण ब्राह्मणों के हितों को क्षति पहुंची तथा पुष्यमित्र शुंग ने ब्राह्मणों के खिलाफ विद्रोह भड़काया, को स्वीकार नहीं किया जा सकता है। इसका सरल सा कारण यह है कि अगर अशोक की नीतियाँ इतनी हानिकारक थी तो उनकी मृत्यु के तुरंत बाद ऐसा होना चाहिए था।

2) दूसरी श्रेणी के विद्वानों का मत है कि अशोक ने जिन शान्ति की नीतियों को प्रारम्भ किया वे मौर्य साम्राज्य के पतन के लिए उत्तरदायी थीं क्योंकि उन्होंने साम्राज्य की शक्ति को कम कर दिया। अशोक की *अहिंसा* की नीति पर ज़ोर देते हुए इसके चारों ओर तर्कों को गढ़ा गया है। यह तर्क प्रस्तुत किया जाता है कि राजा की अहिंसात्मक नीति का परिणाम यह भी हुआ कि वह विशेषकर उन राज्यों के अधिकारियों पर नियंत्रण को बनाए न रख सका, जो दमनकारी हो गए थे और जिन पर नियंत्रणन करना आवश्यक था।

अशोक का उपरोक्त चित्रण सत्य से बहुत दूर है। यह सही है कि अशोक अहिंसा को *धम्म* के लिए अनिवार्य समझता था लेकिन फिर भी उसने इस संदर्भ में उस दृष्टिकोण को नहीं अपनाया। खाने के लिए पशुओं का वध करना और बलि देने को वह पसन्द नहीं करता था, परन्तु फिर भी शाही नीति के रूप में इसको पूर्णतः समाप्त नहीं किया गया और खाने के लिए पशुओं का वध जारी रहा, यद्यपि इसमें कमी निश्चित रूप से आयी। शासन एवं न्यायिक स्तर पर अपराधी को मृत्यु दण्ड देने की प्रथा को समाप्त कर दिया जाना चाहिए था किन्तु यह जारी थी। सेना को निष्क्रिय कर दिया गया था इसके लिए कोई प्रमाण नहीं है न ही किसी शिलालेख से इस संदर्भ में कोई जानकारी मिलती है। अगर इस संदर्भ में कोई प्रमाण मिलता है तो वह है कलिंग राज्य पर अशोक का सैनिक आक्रमण। अगर वह सचमुच शांतिप्रिय होता तो वह कलिंग को स्वतंत्र राज्य के रूप में स्थापित कर देता परंतु उसने एक व्यवहार कुशल शासक के रूप में कलिंग-राज्य पर मगध की सर्वोच्चता स्थापित की। इसके अतिरिक्त अन्य ऐसे बहुत से उदाहरण हैं जिनसे यह सिद्ध होता है कि अशोक ने साम्राज्य पर अपने नियंत्रण को दृढ़ता के साथ स्थापित किया। उदाहरणार्थ, उसने आदिवासियों को चेतावनी देते हुए स्पष्ट किया कि उसके साम्राज्य में रहने वाली जनजातियों का अनाचरण वह एक सीमा के बाहर बर्दाश्त नहीं करेगा। अशोक ने इन सभी कार्यों को इसलिए किया जिससे कि साम्राज्य को सुरक्षित रखा जा सके।

इस प्रकार, निष्कर्ष यह निकलता है कि *अहिंसा* की नीति ने मौर्य सेना एवं प्रशासन व्यवस्था को किसी भी प्रकार से कमज़ोर नहीं किया। इस सब के बावजूद पुष्यमित्र शुंग मौर्य सेना का सेनापति था और अशोक के शासनकाल की आधी शताब्दी के बाद उसने यूनानियों को मगध के अन्दर प्रवेश करने से रोका था। प्रो. रोमिला थापर के अनुसार, शान्तिवादी नीति के एक पीढ़ी तक जारी रहते हुए भी न तो साम्राज्य को कमज़ोर किया जा सकता था और न ही विघटित। "साम्राज्यों के विघटन के लिए केवल युद्धों एवं भू-भाग की प्राप्ति को उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता। बल्कि इसके कारणों की खोज भली भांति ढ़ंग से दूसरे क्षेत्रों में की जानी चाहिये"।

17.6.4 आर्थिक समस्याएं

डी.डी. कौसांबी का कहना है कि मौर्यों ने गंभीर आर्थिक संकट का सामना किया जिसके कारण मौर्य साम्राज्य का पतन हो गया। कौसांबी के द्वारा प्रस्तुत किए गए तथ्य दो प्रकार के हैं और उनसे ऐसा प्रतीत होता है कि मौर्य अर्थव्यवस्था में वित्तीय बाधाएं निहित थीं। (क)

विभिन्न वस्तुओं पर कर बढ़ाने के लिए सरकार ने अनेक उपाय किये। (ख) इस काल के पंच मार्क्ड (आहत सिक्के) सिक्के इस बात का प्रमाण है कि मुद्रा की गुण्वत्ता में गिरावट आई। उनका अन्तिम तर्क उनके द्वारा इस काल के सिक्कों पर किए गए सांख्यिकी विश्लेषण पर आधारित है।

कौसांबी के मगध साम्राज्य में निर्णायक परिवर्तन तथा इन परिर्वतनों में मौर्य साम्राज्य के पतन के मुख्य कारण होने के विचार को स्वीकार किया गया है। उनके विचारों को निम्न प्रकार से वर्णन किया गया है:

1) ऐसा माना जाता है कि राज्य का धातु पदार्थों पर एकाधिकार धीरे-धीरे समाप्त हो गया। कृषि कार्यों के लिए लोहे की मांग इतनी अधिक बढ़ गई कि उसकी पूर्ति अकेले मगध के द्वारा नहीं की जा सकी। वास्तव में दक्कन में लोहे के स्रोतों को खोजने और विकसित करने के लिए प्रयास किए गए। लोहा प्राप्त करने के कुछ स्थल आन्ध्र एवं कर्नाटक में पाए गए। मगध राज्य के लिए इन स्थलों से लोहा प्राप्त करना काफ़ी खर्चीला काम था। इससे संबंधित और भी समस्याएं थीं। जैसे कि इन खदानों को स्थानीय सरदारों के आक्रमण से भी सुरक्षित रखना पड़ता था।

2) दूसरी बात जिस पर ज़ोर दिया गया है, वह यह है कि कृषि उत्पादन में विस्तार, जंगल की लकड़ी के अधिक प्रयोग तथा निर्वणीकरण ने बाढ़ तथा सूखे की स्थिति पैदा की। मौर्यकाल में उत्तरी बंगाल में भयंकर सूखे के प्रमाण मिले हैं। इस प्रकार कई कारणों से राजस्व में कमी आई। सूखे के दौरान राज्य से व्यापक स्तर पर सहायता की अपेक्षा की जाती थी।

केन्द्रीकृत प्रशासन में पर्याप्त मात्रा में राजस्व न उपलब्ध होने की समस्या के कारण दूसरे प्रकार की अन्य गम्भीर मुश्किलें पैदा हो जाती थीं। राजस्व की मात्रा को बढ़ाने के लिए *अर्थशास्त्र* में सुझाया गया है कि कलाकारों और वेश्याओं आदि पर भी कर लगाये जाने चाहिए। सरकारी खजाने में अधिक धन की आवश्यकता के फलस्वरूप उन सभी वस्तुओं पर कर लगाने की प्रवृति को बढ़ावा मिला, जिन पर कर लगाया जा सकता था और मुद्रा और अवमूल्यन से मुद्रा-स्फीति को बढ़ावा मिला। *अर्थशास्त्र* में जो आपातस्थिति में लागू किए जाने वाले उपाय वर्णित हैं उनको उपरोक्त दिए गए संदर्भ में समझा जाना चाहिए। दूसरे, आहत सिक्कों में चांदी की मात्रा को कम करके उनका जो अवमूल्यन किया गया वह इस बात का प्रमाण है कि उत्तर-मौर्य काल के शासकों के समय में खाली होते सरकारी खजाने की आवश्यकता की पूर्ति होती थी। खर्च में भी वृद्धि हुई। अशोक के द्वारा जन कार्यों के लिए खर्च की गई धनराशि से भी स्पष्ट होता है। राज्य को जो अतिरिक्त धन मिलता था वह भी उसकी एवं उसके अधिकारियों की यात्राओं पर खर्च हो जाता था। राज्य ने वित्तीय व्यवस्था पर नियंत्रण के लिए जो प्रारंभिक कठोर उपाय किए थे, वे अशोक के शासन काल में ही परिवर्तित होने प्रारंभ हो गए।

रोमिला थापर ने इस पर अपने विचार व्यक्त किए हैं। उनके अनुसार सिक्कों का अवमूल्यन होना अनिवार्यतः इस बात की ओर संकेत नहीं करता है कि अर्थव्यवस्था पर किसी प्रकार का दबाव था। यह कहना बहुत कठिन है कि कब और कहां सिक्कों का अवमूल्यन हुआ। सकारात्मक रूप में तर्क प्रस्तुत करती हुई वह बताती हैं कि भौतिक साक्ष्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि उस समय में भारतीय उपमहाद्वीप के बहुत से भागों की अर्थव्यवस्था में वास्तव में सुधार हुआ था। उपरोक्त कथन की पुष्टि बेहतर किस्म के पदार्थों के उपयोग, जो कि तकनीकी विकास की ओर इशारा करते हैं, से होता है। इस प्रकार, उनके अनुसार सिक्कों का अवमूल्यन भौतिक जीवन के स्तर में गिरावट के कारण नहीं हुआ

था, बल्कि यह राजनीतिक अव्यवस्था का परिणाम था जो गंगा घाटी में व्याप्त थी और जिसके कारण व्यापारी वर्ग में धन को संग्रहित करने की प्रवृति बढ़ी, जिससे सिक्कों का अवमूल्यन हुआ। इस प्रकार वह निष्कर्ष निकालती हैं, ''इसमें कोई संदेह नहीं है कि मौर्य साम्राज्य के पतन के साथ ही आर्थिक सम्पन्नता भी व्यक्त थी''।

17.7 उत्तर मौर्य काल में स्थानीय राजनीतिक व्यवस्थाओं का विकास

राजा वास्तव में ''साम्राज्य'' के प्रमुख व महत्वपूर्ण क्षेत्रों पर शासन करते थे, जिनका मुख्य केन्द्र मगध था। इसकी अधिक संभावना है कि मौर्यों ने दूर-दराज के क्षेत्रों पर शासन करने वाले राज्यपालों एवं अधिकारियों को स्थानीय लोगों में से चुना हो। कभी-कभी ये अधिकारीगण बड़े शक्तिशाली हो जाते थे और राजाओं के प्रतिनिधियों पर अंकुश लगाने का काम करते थे। जैसा कि पहले भी उद्धत किया गया है कि साम्राज्यवादी व्यवस्था को जारी रखने के लिए इन अधिकारियों की राजनीतिक वफादारी बड़ी निर्णायक होती थी। राजा में परिवर्तन का अर्थ था कि इन वफादारियों का पुनर्निर्धारण होना। यदि ऐसा अक्सर हो, जैसा कि अशोक के बाद के समय में हुआ भी तो व्यवस्था में मूलभूत कमजोरियाँ आ जाती और अंततः यह व्यवस्था असफल हो जाती। अशोक के बाद आधा दर्जन राजाओं ने शासन किया परन्तु उन्होंने अपनी शासन करने की प्रणाली में कोई परिवर्तन नहीं किया और वही नीति अपनाई जो पहले तीन मौर्य सम्राटों ने अपनाई थी। यह भी कहा जाता है कि इनमें से कुछ राजाओं ने लगभग साथ-साथ साम्राज्य के बहुत से भागों पर शासन किया। इससे स्पष्ट है कि मौर्यों के शासन काल में ही साम्राज्य का विखण्डीकरण हो गया था।

जहाँ एक ओर मौर्यों के राजनीतिक पतन ने कई स्थानीय शक्तियों के उत्थान के लिए एक परिस्थिति पैदा की, वहीं दूसरी ओर, मौर्य काल का आर्थिक विस्तार अबाध रूप से चलता रहा। इस प्रकार मौर्यों के अंतर्गत संकट संसाधनों के संगठन और नियंत्रण का था, न कि उनके अभाव का।

बोध प्रश्न 2

1) मौर्य कला की मुख्य विशेषताएं क्या हैं?

....

....

....

....

....

2) क्या अशोक की शांतिवादी नीति मौर्य साम्राज्य के पतन के लिए उत्तरदायी थी? यदि नहीं तो इसके पतन के क्या कारण बताये गये हैं?

....

....

....

....

....

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

3) बताइये कि निम्नलिखित कथन सत्य हैं (✓) या असत्य (✗):

क) *धम्म* की नीति एक नये धर्म की स्थापना का प्रयास था। ( )

ख) *धम्म* ने सम्पूर्ण *अहिंसा* का प्रचार किया। ( )

ग) सारनाथ स्तम्भ के शीर्ष पर एक घोड़े की आकृति है। ( )

घ) पुश्यमित्र शुंग संभवतः मौर्यो के तहत उज्जैन के राज्यपाल थे। ( )

17.8 सारांश

धम्म की नीति के विषय में हमारी जानकारी के स्रोत अशोक के अभिलेख हैं। अशोक ने अपनी *धम्म* की नीति के अंतर्गत *अहिंसा,* सहिष्णुता तथा सामाजिक दायित्व का उपदेश दिया। उसने इन सिद्धांतों का पालन अपनी प्रशासनिक नीति में भी किया। *धम्म* एवं बौद्ध मत को एकरूपी नहीं मानना चाहिए। *धम्म* विभिन्न धार्मिक परम्पराओं से लिए गए सिद्धांतों का मिश्रण था। इसका क्रियान्वयन साम्राज्य को एकसूत्र में बांधने के उद्देश्य से किया गया था।

मौर्य कला एक शाही कला थी यह अशोक के संरक्षण में फली-फूली। विद्वानों में यह विवाद का विषय है कि क्या यह कला अकेमेनिड कला परम्पराओं से प्रभावित थी या वैदिक काल से शुरू हुए एक लम्बे देशी आंदोलन का परिणाम थी।

मौर्य साम्राज्य के पतन के लिए विभिन्न कारक महत्वपूर्ण माने गये हैं। अशोक के उत्तराधिकारी साम्राज्य की उस अखण्डता को बनाए रखने में असफल रहे जो उन्हें अशोक से विरासत में प्राप्त हुई थी। अशोक के बाद साम्राज्य के बंटवारे एवं शीघ्र-शीघ्र शासकों के परिवर्तन ने निःसंदेह साम्राज्य के आधार को कमज़ोर किया। परन्तु अधिक महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि मौर्य साम्राज्य व्यवस्था में अंतर्निहित विरोधाभासों ने इस संकट को और अधिक गहरा किया। उच्च स्तरीय केंद्रीकृत नौकरशाही की निष्ठा राजा के प्रति थी न कि राज्य के प्रति जिसके कारण प्रशासन का आधार पूर्णतः व्यक्तिवादी हो गया। राजा के परिवर्तन का तात्पर्य अधिकारियों में भी परिवर्तन होना था जिसका अशोक के बाद में प्रशासन पर बड़ा बुरा प्रभाव पड़ा।

हम देख चुके हैं कि पहले कुछ विद्वान किस भांति अशोक की नीतियों को मौर्य साम्राज्य के पतन के लिए उत्तरदायी ठहराते हैं परन्तु समकालीन प्रमाणों के आधार पर ये विचार स्वीकारने योग्य नहीं हैं। मौर्य साम्राज्य के पतन के कारणों पर कुछ विद्वानों के द्वारा आर्थिक समस्याओं के परिप्रेक्ष्य में भी विचार किया गया है और हमने भी इस पर अपना ध्यान केंद्रित किया है। अंत में हमने उत्तर एवं दक्षिण भारत में राजनीति के उत्थान पर भी प्रकाश डाला है जिसने मौर्य साम्राज्य के पतन की प्रक्रिया को तेज गति प्रदान की।

17.9 शब्दावली

व्यापारी वर्ग : उत्पादन प्रक्रिया से जुड़े लोगों से भिन्न समाज का वह वर्ग जो व्यापार तथा विनिमय की गतिविधियों से जुड़ा था।

***धम्म* यात्राएं** : अशोक के पूर्वज शिकार और आनंद मनाने के लिए *विहार यात्राएं* करते थे। बोधगया से लौटने के बाद अशोक ने *विहार यात्राएं* बंद करके *धम्म* यात्रा आरम्भ की क्योंकि इन *धम्म* यात्राओं में उस *धम्म* का प्रवचन करने और प्रजा के

विभिन्न वर्गों से सीधा संबंध स्थापित करने का अवसर मिलता था।

उदारवादी : जो विभिन्न विचारों और दर्शनों को मुक्त रूप से अपनाता हो।

अनुसमयान : वृहद् शिलालेख 3 में अनुसमयान (निरीक्षण यात्राओं) का वर्णन है जिनमें कुछ श्रेणियों के राज्य कर्मचारी पांच-पांच वर्ष पर निकलते थे और जिनमें *धम्म* का प्रवर्तन और सरकारी काम-काज किया जाता था।

राजनीतिक व्यवस्था : राजनीतिक संगठन के प्रकार – कुछ राजतांत्रिक, गणतांत्रिक या कबीलाई हो सकते हैं।

पार्थियन : पार्थिया प्रदेश के निवासी, यह प्रदेश बैक्ट्रिया के पश्चिम और कैस्पियन सागर के दक्षिण-पूर्व में स्थित था।

शांतिवादी : युद्ध का विरोधी, जो यह विश्वास करता है कि सभी युद्ध गलत हैं।

17.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) भाग 17.2 तथा इसके संबंधित उपभागों को देखें।

2) भाग 17.4 तथा उसके उपभागों को देखें।

39 उपभाग 17.4.4 देखें।

बोध प्रश्न 2

1) भाग 17.5 देखें।

2) भाग 17.6 तथा उसके उपयोगी उपभाग देखें।

3) (क) × (ख) × (ग) ✓ (घ) ✓

17.11 संदर्भ ग्रन्थ

बैशम, ए. एल. (1967). *द वंडर दैट वॉस इंडिया.* नयी दिल्ली.

देवाहूती, डी. (1997). मौर्य आर्ट एंड द 'ऐपिसोड' थ्योरी. *ऐनल्स ऑफ द भंडरकर ओरिंटल रिसर्च इंस्टीटयूट.* वॉल्यूम 52, 1/4. 161-73.

हंटिंगटन, सूसन एल. (2016). *ऐशियंट इंडियाः बुद्धिस्ट, हिन्दु, जैन.* मोतीलाल बनारसीदास पबलिर्षस, सैकंड ऐडिशन.

रे, निहरंजन (1945). *मौर्य एंड शुंग आर्ट.* यूनीवर्सिटी ऑफ कोलकता

थापर, रोमिला (1960). *अशोक एंड द डिक्लाईन ऑफ द मौर्याज़.* दिल्ली.